موضوع الخطبة :الخصائص العشرة لليلة القدر

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمى(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

शबे क़दर की दस विशेषताएं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ)

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا

وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- ए मुसलमानो!में तुम्हें और स्वयं को अल्लाह के तक़वा(धर्मनिष्ठा)की वसीयत करता हूं,यह वह वसीयत है जो अल्लाह ने पूर्व एवं पश्चात के समस्त लोगों को की है:

  (وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ)

अर्थातःनिसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए गए थे और तुम को भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो।

अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा) अपनाएं और उससे डरते रहें,उसकी आज्ञाकारी करें और उसके अवज्ञा से बचें,जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी ह़िकमत (नीति) से कुछ समय को कुछ पर प्राथमिकता एवं प्रधानता प्रदान किया है,अतः जिलह़िज्ज के दस दिनों को वर्ष के अन्य दिनों पर प्राथमिकता दी है,अ़रफा के दिन को वर्ष के समस्त दिनों पर प्राथमिकता प्रदान किया है,रमज़ान को अन्य समस्त महीनों पर प्रधानता दी है और शबे क़दर को रमज़ान की समस्त रातों से श्रेष्ठतर बताया है, शबे क़दर की दस विशेषताएं हैं जो निम्नलिखित हैं:

- प्रथम विशेषताःयह वह रात है जिसको अल्लाह ने यह विशेषता प्रदान किया है कि उसमें कुरान के नाज़िल करना प्रारंभ किया,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ)

अर्थातःनिसंदेह हमने इसे शबे क़दर में नाज़िल किया।

इसी रात में कुरान लौहे मह़फूज़ से बैतुलइज्ज़त में नाज़िल हुआ जो सांसारिक आकाश में है,फिर वहां से घटनाओं के अनुसार क्रमशः नाज़िल होता रहा।

- शबे क़दर को इस नाम से जानने का कारण यह है कि इस रात का बड़ा महत्व है,जैसा कि कहा जाता है(अमुक व्यक्ति का बड़ा महत्व है),इस प्रकार महत्व को रात से संबंध करना,किसी वस्तु को उसके विशेषण की ओर संबंध करने की जाति से है।
- एक कथन यह है कि चूंकि इस रात में पूरे साल के मामले मोक़्ददर(निश्चय) किए जाते हैं,अर्थात वार्षिक तक़्दीर निश्चय किए जाते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

(فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ)

अर्थातःइसी रात में प्रत्येक मज़बुत कार्य का निर्णय किया जाता है।

इब्नुलक़य्यिम कहते हैं कि:यही कथन सत्य है। { शफाउलअ़लीलः1/110,प्रकाशकःअलअबीकान पुस्तकालय.रियाज} {इन दोनों कथनों के लिए देखें":अह़दीसल सियाम"140,शैख अब्दुल्लाह अलफौज़ान की}

अतः इस रात में निर्णय लिया जाता है कि आगामी वर्ष में कोनसे कार्य होने हैं।अर्थात अल्लाह तआ़ला देवदूतों को पूरे वर्ष की गतिविधियों से अवगत करता है,उन्हें विस्तारपूर्वक आगामी वर्ष की शबे क़दर तक घटने वाले समस्त घटनाओं से संबंधित कर्तव्यों का आदेश देता है,उनके समक्ष मृत्यु,रिज़्क,फक़ीरी व अमीरी,हरयाली व अकाल,स्वास्थ्य एवं रोग,युद्ध एवं भूकंप और इस वर्ष घटित होने वाले समस्त घटनाएं स्पष्ट कर दिए जाते हैं। {अल्लाह

तआ़ला के कथन (فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ)का व्याख्या देखेंःशंक़ीती रहिमहुल्लाह की तफसीर"अज़वाउल बयान"में सूरह अलदोखन में।}

इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैंःशबे क़दर में लौहे महफूज़ से,आने वाले वर्ष के मध्य घटने वाली मृत्यु एवं जीवन,रिज़्क एवं वर्षा उल्लेख किया जाती हैं,यहां तक कि हाजियों के विषय में भी लिख लिया जाता है कि अमुक अमुक व्यक्ति ह़ज करेंगे4{इस कथन को इब्ने जरीर आदी ने इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा से निम्नलिखित आयत की व्याख्या में उल्लेख किया है,उपरोक्त शब्द इब्ने जरीर से वर्णित हैं।}

- शबे क़दर की द्वितीय विशेषता यह है किःइस में देवदूत पृथ्वी पर नाज़िल होते हैं,अल्लाह का कथन हैः

(تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا)

अर्थातःइसमें देवदूत और रूह़(जिबरईल) उतरते हैं।

रूह़ का अर्थ जिबरईल है,इब्ने कसीर रहीमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या में लिखते हैंःअर्थात यह रात जोकि बड़ी बरकतों वाली होती है,इस लिए अधिक संख्या में देवदूत नाजिल होते हैं,बरकत एवं रह़मत के साथ देवदूत भी नाजिल होते हैं,जिस प्रकार कुरान के सस्वर पाठ के समय देवदूत नाजिल होते हैं,शैक्षिक सभा को घेर लेते हैं और सत्य नियत के साथ ज्ञान प्राप्ति में व्यस्थ रहने वाले छात्रों के सम्मान में अपने पंख बिछा देते हैं।समाप्त

- शबे क़दर की तृतीय विशेषताःअल्लाह तआ़ला ने इस रात को सौभाग्यशाली बताया है,अल्लाह तआ़ला कुरान के नाज़िल होने के प्रति फरमाता हैः

(إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ)

अर्थातःनिसंदेह हमने इसे सौभाग्यशाली रात में उतारा है।

- शबे क़दर की चौथी विशेषताःअल्लाह तआ़ला ने इसे शांति की रात कहा है यहां तक कि फजर हो जाए,अर्थात प्रत्येक प्रकार की बुराइयों व फितनों से सलामति(सुरक्षा)की रात,क्योंकि इस में कलयाण एवं अच्छाई अधिक से अधिक होती है,यहां तक कि फजर निकल आए।
- शबे क़दर की पांचवी विशेषताःजो व्यक्ति इस रात को क़याम करे अर्थात इसे नमाज़ से आबाद करे, (ईमान के साथ) अर्थात अल्लाह तआ़ला इस महान रात में क़याम करने वालों के लिए जो बदला व पुण्य तैयार कर रखा है,उस पर ईमान

रखते हूए,. (एहतेसाब के साथ) अर्थातःबदला व पुण्य की आशा करते हुए,उसके पूर्व के समस्त पाप माफ हो जाते हैं,अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो लैलतुल क़दर में ईमान व एहतेसाब के साथ नमाज़ में खड़ा रहे उस के पुर्व के समस्त पापों को क्षमा प्रदान किया जाता है" {इसे बोखारी(1901)और मुस्लिम(759)ने रिवायत किया है।}

- शबे क़दर की छटी विशेषताःइस रात को नमाज़ से आबाद करना हज़ार रातों की प्रार्थना से बेहतर है,अर्थात तेरासी(83)वर्षों से भी अधिक,अल्लाह का कथन हैः

(لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ)

अर्थातःशबे क़दर एक हज़ार महीनों से बेहतर है।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"रमज़ान का शुभ महीना तुम्हारे पास आ चुका है,अल्लाह तआ़ला ने तुम पर इसके रोज़े फरज़ कर दिए हैं,इस में आकाश के दरवाजे खोल दिए जाते हैं,नरक के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं,और सरकश शैतानों को जंजीरें लगा दी जाती हैं,और इस में अल्लाह तआ़ला के लिए एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है,जो इस के अच्छाई से वंचित रहा तो वह बस वंचित ही रहा" {इसे निसाई(2106) ने अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही कहा है।}

इब्ने सादी रहिमहुल्लाह फरमाते हैंःयह ऐसा (पुरस्कार) है जिस के सामने बुद्धि आश्चर्यचकित और चेतना परीशान होजाता है कि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस रात की प्रार्थना हज़ार रातों की प्रार्थना के समान है,जो कि एक लंबी आयू वाले मनुष्य के जीवन के बराबर है,अस्सी(80)वर्ष से भी अधिक।संक्षेप एवं हलके हैरफैर के साथ समाप्त हुआ।

- शबे क़दर की सातवीं विशेषताः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के अंतिम दस दिनों में शबे क़दर की खोज में जितना परिश्रम करते थे उतना परिश्रम अन्य दिनों में नहीं करते थे,आयशा रजीअल्लाहु अंहा रिवायत करती हैं कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंतिम अ़शरे(अंतिम दस दिनों)में प्रार्थना में इतना परिश्रम करते थे जितना अन्य दिनों में नहीं करते थे। {मुस्लिम (1175) }
- आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याह आदत थी कि जब रमज़ान का अंतिम अ़शरा आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम रात भर जागते और घर वालों को भी जगाते, (प्रार्थना में) कठोर परिश्रम करते और कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते थे। {बोखारी(2034),मुस्लिम(1174) और निम्नलिखत शब्द मुस्लिम से वर्णित हैं।}

(कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते)इस का अर्थ यह है कि प्रार्थना के लिए तैयार रहते,उसमें परिश्रम एवं लगन से काम लेते,और आदत के कहीं अधिक प्रार्थना करते थे,एक कथन यह भी है कि पत्नियों से अलग रहते और संभोग से दूर रहते।

- शबे क़दर की आठवीं विशेषताः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शबे क़दर की खोज में रमज़ान के अंतिम अ़शरे में मस्जिद के अंदर एतेकाफ किया करते थे,आयशा रजीअल्लाहु अंहा फरमाती हैंः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मृत्यु तक बराबर रमज़ान के अंतिम अ़शरे में एतेकाफ करते रहे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां एतेकाफ करती रहीं।3{इसे बोखारी(2026)और मुस्लिम(1172)ने रिवायत किया है।}

अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःमेंने शबे क़दर को खोजने के लिए प्रथम अ़शरे का एतेकाफ किया,फिर मेंने मध्य अ़शरे का एतेकाफ किया,फिर मेरे पास(जिबरईल आए) तो मुझसे कहा गयाःवह अंतिम दस रातों में है तो अब तुम में से जो एतेकाफ करना चाहे वह एतेकाफ करले। {मुस्लिम (1167)}

- ए अल्लाह के बंदो! पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना परिश्रम एवं लगन से प्रार्थना करना इस बात का प्रमाण है कि आप महत्वपूर्ण समयों में अल्लाह की अधिक से अधिक आज्ञाकारी किया करते थे,इस लिए मुसलमानों को भी पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगमन करना चाहिए कि आप ही आदर्श हैं,हम मुसलमानों को अति परिश्रम के साथ अल्लाह की पूजा करनी चाहिए और रात व दिन के समय को नष्ट नहीं करना चाहिए,क्योंकि मनुष्य नहीं जानता कि कब स्वादों को तोड़ने और लोगों से जुदा करदेने वाली मौत उसे आ पकड़े,फिर उस समय उसे अफसोस हो जब अफसोस का कोई लाभ नहीं होगा। {शैख मोह़म्मद बिन सालेह़ अलमुनजिद के लेख से हलके हैरफैर के साथ लिया गया है,मेंने यह कथन उनके वैबसाइट से लिया है।}

शबे क़दर की नौवीं विशेषताःइस रात में विशेष रूप से अल्लाह से क्षमा प्राप्त करने पर प्रोत्साहन आया है,आयशा रजीअल्लाहु अंहा ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाःए अल्लाह के नबी!यदी में शबे क़दर पालूं तो क्या दुआ मागूं?आपने फरमायाः"यह कहनाः

(اللهم إنک عفو تحب العفو فاعف عني)

अर्थातःहे अल्लाह!तू अधिक क्षमा प्रदान करने वाला है,तू क्षमा को पसंद करता है,अतःमुझे क्षमा प्रदान कर दे।

- शबे क़दर की दसवीं विशेषताःअल्लाह तआ़ला ने इस के महत्व में एक सूरह नाज़िल फरमाई जो क़यामत तक सस्वर पाठ की जाती रहेगी,इसके माध्यम से इस की महानता को स्पष्ट किया,इसकी महानता का कारण यह बताया कि इस रात कुरान नाज़िल किया गया,एवं यह भी उल्लेख किया कि इस रात देवदूत पृथ्वी पर उतरते हैं,एवं जो इस रात को नमाज़ एवं प्रार्थना में गुजारता है उसका क्या पुण्य है,इस रात के आरंभ और अंत को स्पष्ट किया,समस्त प्रशंसाऐं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने बंदों पर कृपा करते हूए उन्हें पुण्य के वसंत का मौसम प्रदान किया।
- हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसी प्रकार रमज़ान के रोज़े रखने की तौफीक़ प्रदान करे जिस प्रकार उसे पसंद है,और अपने ज़िक्र व धन्यवाद और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।
- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को इस की आयतों और नितीयों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

- आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने शबे क़दर को अपनी नीति से गुप्त रखा है,वह हिकमत यह है कि मोमिन बंदा उसकी खोज में पूरी दस रातें प्रार्थना करे,ताकि बड़े पुण्य को प्राप्त कर सके,इसके विपरीत यदि मालूम होता कि शबे क़दर कोंसी तिथि को होती है तो वह केवल उसी रात में प्रार्थना करता।

यदि शबे क़दर के बारे में मालूम होता कि वह कोंसी रात है तो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके खोज में पूरी दस रातें एतेकाफ न करते और न अपनी उम्मत को यह निर्देश देते कि उसकी खोज में दस रात एतेकाफ करें,बल्कि केवल शबे क़दर में ही आप एतेकाफ करते,जबकि वास्तव यह है कि आप ने संपूर्न दस रातों में उसको खोजने का आदेश दिया है,विशेष रूप से ताक़(विषम) रातों में,जो इस बात का प्रमाण है कि ताक़ रात में शबे क़दर होने का अधिक संभावना होता है,आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"शबे क़दर को रमज़ान के अंतिम अ़शरे की ताक(विषम) रातों में खोजो" {बोखारी 2017}
ज्ञात हूआ कि इस्लामी पाठ इस बात के साक्ष हैं कि शबे क़दर प्रत्येक वर्ष अलग अलग रातों में हुआ करती है,किंतु इन दस रातों के अंदर ही सीमित रहती है।

इस लिए मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़शरे की समस्त रातों के अंदर प्रार्थना में वयस्ता रहे,लोग सोशल नेटवर्क पर जो प्रसारित करते फिरते हैं कि शबे क़दर अमुक रात को होती है,इससे सतर्क रहें,यह ऐसी बात है जो समय की बरबादी और अ़मल से दूरी की ओर लेजाती है।

- ए अल्लाह के बंदो!मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़शरे में अन्य दिनों के तुलना में अधिक परिश्रम एवं लगन से प्रर्थाना करे,इसके दो कारण हैं,एक यह किःइस अ़शरे का अधिक महत्व है और इसी में शबे क़दर भी होती है,दूसरा यह किःयह महीना उससे विदा हो रहा है और वह नहीं जानता कि आगामी वर्ष उसे यह महीना नसीब होगा अथवा नहीं। {यह कथन इब्न अलजौज़ी का है जो उन्होंने अपनी पुस्तक"'अलतबसेरह"में उल्लेख किया है,हैरफैर के साथ वर्णित।}
- आप यह भी जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करं-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

- हे अल्लाह! तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए रह़मत का कारण बना।

- हे अल्लाह! हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की सारी भलाई की दुआ मांगते हैं जो हमको मालूम है और नहीं मालूम,और हम तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम हैं और जो मालूम नहीं।

हे अल्लाह!में तुझसे स्वर्ग की भीक मांगता हूं और उस कथन एवं कार्य की भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और में तेरा शरण चाहता हूं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।

- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सही करदे,जो हमारे(दीन व दुनिया क) प्रत्येक काम की सुरक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सही करदे जिसमें हमारा गूजारा है और हमारी आखिरत को सही करदे जिसमें हमारा(अपनी मंजिल की ओर) लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बनादे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए शर से राहत बनादे।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

२५ रमज़ान १४४२ हि़जरी

जूबैल, सऊदी अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com